इसलिये उन्होंने इसका नाम बदल दिया लेकिन जिस आदमी ने कालेज बनाया ....

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ARVIND GANESH KULKARNI): Mr. Jha, please conclude. I am calling the next speaker.

श्री शिव चन्द्र झा : इस तरह से यदि आप को नामकरण बदलना है तो आज के वक्त में पहले तो आप अलीगढ़ मुस्लिम को हटा कर अलीगढ़ यूनिवर्सिटी रखें और अगर आप नाम ही रखना चाहते हैं तो सर सैयद अहमद खान के नाम से यूनिवर्सिटी का नाम रखें। लेकिन आप जो संशोधन ला रहे हैं इससे आप वही पुराना रूप दे रहे हैं, साम्प्रदायिक रूप दे रहे हैं। इसलिये जो आपने संशोधन रखा है मैं इस संशोधन का विरोध करता हूं।

4.00 P.M.

SHRI K. K. MADHAVAN (Kerala): Sir, I have to contradict the Minister. Give me just one minute.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ARVIND GANESH KULKARNI): Mr. Madhavan, I am calling the Members party-wise. This is not an occasion for discussion. The discussion has already taken place. Many Members have spoken. On amendments only the party-wise position is to be explained. That is how I am allowing them. Yes, Mr. Yadav.

श्री श्याम लाल यादव (उत्तर प्रदेश) : मान्यवर, मैं इस संशोधन का जो श्री त्रिलोकी सिंह जी ने पेश किया है, उसका समर्थन करता हूं और यह कहना चाहता हूं कि इस संशोधन के संबंध में जो बातें माननीय शिक्षा मंत्री जी ने कही हैं उनसे ऐसा लगता है कि वे कुछ भ्रम में रहे हैं। अगर वे वास्तविक बातों और तथ्यों पर सही रूप में जाते तो जो विवरण उन्होंने इस विधेयक के संबंध में दिये हैं उनको देने की जरूरत नहीं पड़ती। शिक्षा मंत्री जी ने ऐतिहासिक तथ्यों की तरफ, सुप्रीम कोर्ट के निर्णय की तरफ और दूसरी बातों की तरफ इशारा किया है। वे सभी बातें, मैं समझता हूं, इस बिल के संबंध में आवश्यक नहीं थी। उन्होंने जो उदाहरण दिये उनको भी देने की आवश्यकता नहीं थी। हमारे शिक्षा मंत्री जी भी मानते हैं और हमारी सरकार भी मानती है कि अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी केवल मुसलमानों द्वारा प्रस्थापित की गई थी। इस यूनिवर्सिटी की जब स्थापना हुई तो इसका नाम मोहमडन एग्लो-ओरिएन्टल कालेज अलीगढ़ था और उसी ऐतिहासिक तथ्य को यहां पर उद्घाटित किया गया है और उसकी व्याख्या की गई है। शिक्षा मंत्री जी ने यह बात कही कि यह कालेज उस यूनिवर्सिटी के साथ मर्ज नहीं किया गया था। मैं समझता हूं कि यहां पर इस कालेज के मर्ज होने का सवाल नहीं है। सवाल यह है कि जब इस कालेज की स्थापना हुई तो उसका नामकरण इसी नाम से किया गया था और इसका नाम मोहमडन एग्लो-ओरिएन्टल कालेज, अलीगढ़ रखा गया था। बाद में चल कर यहां पर अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी बनी और इसके साथ यह नाम इनकारपोरेट कर दिया गया। पार्लियामेंट के एक्ट से यह यूनिवर्सिटी बनी। यह सही है कि पिछली बार इस विधेयक में कुछ संशोधन किये गये जिससे लोगों की भावनाओं को ठेस लगी। मैं इस संबंध में यह भी कहना चाहता हूं कि आज कांग्रेस के एक माननीय सदस्य ही यह संशोधन लाये हैं। दोनों कांग्रेस पार्टियां इस मामले में पूर्ण रूप से एक हैं, यह बात आप देख रहे हैं। हम सब इस विधेयक का समर्थन कर रहे हैं और इस बात को स्वीकार करते हैं कि अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी का एक माइनोरिटी केरेक्टर है और हमें उसको उसी रूप में मान्यता देनी चाहिए। मैं यह आशा करता हूं कि यह संशोधन इस सदन द्वारा स्वीकार होने के बाद माननीय शिक्षा मंत्री इतनी उदारता अवश्य रखेंगे और इस सदन के प्रति सम्मान रखते हुए इस बिल को दूसरे सदन में भी पास कराने

की चेष्टा करेंगे । इन शब्दों के साथ मैं इस विधेयक का समर्थन करता हूं ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ARVIND GANESH KULKARNI): Mr. Triloki Singh, do you want to reply?

श्री त्रिलोकी सिंह : जी हां । मान्यवर, मुझे केवल इतना ही कहना है कि माननीय मंत्री जी ने पुन कानूनी सलाह को उठाया है और यह कहा है कि पार्लियामेंट को अधिकार प्राप्त है कि वह इस कानून में जब चाहे तरमीम करे या इसको रद्द कर दे । मैं समझता हूं कि इस पर तो कभी कोई विवाद नहीं रहा है और कभी किसी ने नहीं कहा कि पार्लियामेंट को कानून बनाने का हक नहीं है मैंने पहले ही निवेदन किया है कि अगर कोई विपरीत हालत होती तो मैं यह बिल सदन में नहीं लाता । मंत्री जी को तमाम अख्तियार हैं और वे दोनों हाउसों में अपने बहुमत के आधार पर अलीगढ़ युनिवर्सिटी एक्ट को चाहें तो बिल्कुल रिपील कर सकते हैं । इस मामले में उनसे हमारा कोई झगड़ा नहीं है । मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूं कि महमडन एग्लो-ओरिएन्टल कालेज इसके लिए एक न्यूक्लीयस बना । जिस प्रकार से सेन्ट्रल हिन्दू कालेज बनारस युनिवर्सिटी के लिए न्यूक्लीयस बना । यह कालेज डा० एनी बेसेन्ट ने स्थापित किया था । यूनिवर्सिटी एक्ट के प्रिएम्बल में यह साफ लिखा हुआ है कि —

"Whereas it is expedient to establish and incorporate a teaching and residential Muslim University at Aligarh and to dissolve the Societies registered under the Societies' Registration Act, 1860 which are respectively known as the Muhammadan Anglo-Oriental College and the Muslim University Association...".

मोहमडन एग्लो-ओरियंटल कालेज को एक करोड़ रुपये की जायदाद, इमारत, सारा फर्नीचर, इक्वीपमेंन्ट सब का सब दिया गया—

to transfer and vest in the same University all properties and rights of the said Society under the Muslim University Foundation Committee.

मेरी समझ में नहीं आता है मान्यवर, कि यह कम्युनल भावना कहां से आती है । अगर हम अपने को मुसलमान कहे तो हम कम्युनल हो गये, अगर हम अपने को हिन्दू कहें तो कम्युनल हो गये, इसाई कहें तो कम्युनल हो गये । मैं मान्यवर मंत्री जी से यह कहना चाहता हूं कि इस मुल्क में ऐसा प्रबंध कीजिये ताकि लोग न अपने को हिन्दू कहें, न अपने को मुसलमान कहें बल्कि वे अपने को हिन्दुस्तानी समझें । अगर वे अपने को हिन्दुस्तानी समझेंगे तो यह दिक्कत हल हो जायेगी । इसीलिये मैंने यह जुर्रत की कि यह तरमीमी बिल इस आदरणीय सदन में पेश किया और मैं आज भी सदन के हर तरफ के सदस्य से यही निवेदन करना चाहता हूं बड़ी नम्रतापूर्वक कि खुदा के लिये हिन्दी बनिये । जब आप हिन्दी बनेंगे तो आपका देश तरक्की करेगा । और इसी गरज से मैंने इसको पेश किया । मैं उम्मीद करता हूं कि मेरी पेश की गई तरमीम स्वीकार की जायेगी ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ARVIND GANESH KULKARNI): The question is:

3. "That at page 1, for Clause 2, the following Clause be substituted, namely:

'2. In section 2 of the Aligarh Muslim University Act, 1920 (hereinafter referred to as the principal Act), for sub-section (1), the following sub-section shall be substituted, namely:—

"(1) 'University' means the educational institution of their choice established by the Muslims of India which originated as the Mohammadan Anglo-Oriental College, Aligarh and which was subsequently incorporated as Aligarh Muslim University.""

The motion was adopted.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ARVIND GANESH KULKARNI): The question is;

"That clause 2, as amended, stand part of the Bill."

The question was proposed.

Clause 2, *as amended, was added to the Bill.*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ARVIND GANESH KULKARNI): Now we shall take up clause 3. There are no amendments.

Clause 3 *was added to the Bill.*

Clause 1 *(Short title and commence, ment)*

SHRI TRILOKI SINGH; Sir, I beg to move:

2. "That at page 1, line 4, for the figure '1977' the figure '1979' be substituted."

Sir, this is a consequential amendment and I do not think there will be any opposition to it.

The question was proposed.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ARVIND GANESH KULKARNI): The question is:

2. "That at page 1, line 4, for the figure '1977' the figure '1979' be substituted.".

The motion was adopted.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ARVIND GANESH KULKARNI): The question is:

"That Clause 1, as amended, stand part of the Bill".

The motion was adopted.

Clause 1, *as amended, was added to the Bill.*

Enacting Formula

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ARVIND GANESH KULKARNI): There is one amendment to the Enacting Formula by Shri Triloki Singh.

SHRI TRILOKI SINGH: Sir, I beg to move:

1. "That at page 1, line 1, for the word 'Twenty-eighth' the word 'Thirtieth' be substituted."

Sir, this is a consequential amendment.

The question was proposed

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ARVIND GANESH KULKARNI): The question is:

1. "That at page 1, line 1, for the word "Twenty-eighth' the word 'Thirtieth' be substituted."

The motion was adopted.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ARVIND GANESH KULKARNI): The question is:

"That the Enacting Formula, as amended, stand part of the Bill."

The motion was adopted.

The Enacting Formula, as amended, was added to the Bill.

The Title was added to the Bill.

SHRI TRILOKI SINGH: Sir, I move:

"That the Bill, as amended, be pass-ed."

The question was put and the motion was adopted.

श्री कल्प नाथ राय : सरकार हार गयी, इस्तीफा दे दो।

DR. RAM KRIPAL SINHA: Thi House has reversed your previous amendment. It is against you.

श्री कल्प नाथ राय : जनता सरकार हार गई यह प्रधान मंत्री को बताने की रक्षा करे।

THE HINDU MARRIAGE (AMENDMENT) BILL, 1976

(Insertion of new section 7A)

SHRI SHIVDAYAL SINGH CHAURASIA (Uttar Pradesh): Sir, I beg to move:

"That the Bill further to amend the Hindu Marriage Act, 1955, be taken into consideration."

Sir, the proposed Bill is an attempt to modernise the Hindu law of marriage by simplifying the ceremonies of marriage between two "Hindus. The Bill proposes to amend section 7 of Hindu Marriage Act, 1955 by inserting section 7A to it.

Hindu law has treated marriage as sacrament and not contract. A Hindu marriage could be performed only within the same *varna* and only between Hindus. There was absolutely no provision of marriage between a Hindu and non-Hindu. Even among the same *varna* there were restrictions of caste, *gotra* etc. There were a number of restrictions on who could marry whom. Women were given a very bad treatment by the law-givers. She was treated as chattel, she could hold no property, widow -Could not marry. She could not take divorce even if the husband was cruel or impotent. Often she was made to commit suicide—*sati*—on the death of the husband.

With the coming Of liberal spirit oi British, many changes were introduced in Hindu law and finally in 1955 the law of marriage became quite modem. Women were granted right of property. She could divorce a husband. She was treated on equality. Restrictions of caste, *varna> gotra,* etc. became irrelevant and Hindu marriage became a contract rather than a s[30]" rament.

But even in 1955 Act a provision was kept which was not only derogatory but also contradictory to the spirit of the change introduced in Hindu law through the set of four laws... *(Interruption)*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ARVIND GANESH KULKARNI): Mr. Kalp Nath Rai, please keep silence. Reporters cannot listen properly.

SHRI SHIV DAYAL SINGH CHAURASIA: This provision is regarding the essential ceremonies by which alone a Hindu marriage could be solemnised. Section 7 of Hindu Marriage Act provides that a TTrtiolu marriage can be solemnised by performing customary ceremonies of either party.

The word 'customary' has led the courts to conclude that as far as the ceremonies are concerned, there is no change in the law in 1955. In a number of cases the courts have held unless ceremonies like *vivah.hom;* or Saptapadi are performed the marriage is incomplete and invalid.

The ceremonie3 of marriage in Hindus may differ from caste to caste and area to area but in each community these have to be performed by none else but Brahmins. And what is the qualification of a Brahmin that entitles him to declare a man and a woman, a husband and wife, except being a son of a Brahmin? Most of the Brahmins who perform this duty are mere literates. They do not know Sanskrit at all in which all the ceremonies are performed. They are hardly any judge of human character to advise the couple of duties of a married life. In fact, these priests would marry anyone for a few paltry rupees even if the girl had been kidnapped or being forced to marry against her wishes.

In case of *surdas,* their dependence on this relic of feudal age is most objectionable. As the law stands today, in a village if Brahmins refuse to perform marriage ceremonises of *surdas,* I they have no alternative. Civil mar-

riage can be performed only in cities where lawyers demand high fees for such services. If we want to do away with the dominance of the upper , castes, it is necessary that in such a vital matter like marriage, their presence be not required by the law.

Some people may point out that marriages without priests can be performed in courts. That is true, but according to section 19 of the Special Marriage Act of 1955, when a Hindu, Sikh, Buddhist or Jain marries under that Act he ceases to be a member of Hindu undivided family, and section 20 prescribes that only the Indian Succession Act and not the Hindu Succession Act will be applicable to :ich Hindus.

[The Vice-Chairman (Shu Shyam 'Lai ..Yadav) in the Chair. In effect, law starts treating those who marry under the Special Marriage Act as non-4tfindus. In fact they become religionless people.

It was this predominance of Brahmins in the case of marriage that in the thirties an Anti-Purohit Association was formed in Madras and hundreds °f marriages were performed by this Association in which ceremonies were simple. However, when such a marriage was challenged in the court, the High Cour^ of Madras declared that it might be a laudable thing to , simplify the ceremonieg_of marriage, but no group or association, however large their number be, can change the cutomary ceremonies. The mar-
* riages done under the auspices of this Association could be legalised only in 1967 when the Madras Legislature passed an amendment to section 7 of the Hindu Marriage Act of 1955. It is the same amendment in essence which is sought to be extended all over India
p by this Bill.

Not only the Madras High Court but other High Courts and the Supreme Court too had been of the view that customary ceremonies are a must. The Supreme Court has set free many men who were charged of bigamy by declaring that the second marriage was not legal since all ceremonies were not performed although the evidence showed that they were residing together like man and wife. Since the same law will be applicable to all other matters too, it is necessary that Parliament declares that such obsolete, useless and ununderstandable ceremonies need not be performed compulsorily.

It may be pointed out that marriage among Hindus has come a long way. The age of marriage has now been raised to 18 and 21 for girls and boys respectively. The couple to be married now knows fully what it wants to do. They nderstand the meaning of marriage and the responsibilities that such a union puta on them. It is not wise that in such cases the binding force be those centuries-old hymns and *mantras* which have no relevance today and no one understands them. It is preposterous that a graduate couple has to be married today by an illiterate, uneducated priest. The 1967 amendment of Tamil Nadu has now been in force for ten years and no untoward social problems have been caused. There is no reason why the whole nation cannot practice what a State of the Union may.

Now, Sir, I will read the BUI which I am requesting the House to take into consideration:—

"A Bill further to amend the Hindu Marriage Act, 1955.

BE it enacted by Parliament in the Twenty-seventh year of the Republic of India as follows—

1. (1) This Act may be called the Hindu Marriage (Amendment) Act, 1976.

(2) It extends to the whole of India."

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SHYAM LAL YADAV): You need not read the whole Bill. The Bill has already been circulated to the hon. Members.

SHRI SHIVDAYAL SINGH CHAURASIA: Then it is all right.

यह हिन्दू मेरीज एक्ट का अमेंडमेंट जो है, आपको मालूम है कि हमारे यहां हिन्दू स्त्रियों की जो दुर्दशा रही है, मैं तो यह कहता हूं कि आपने कभी सोचा नहीं होगा कि यह देश क्यों सबसे गरीब है और क्यों सब से ज्यादा इलिट्रेट है ? कभी ख्याल किया आपने ?

इसलिये कि धन की मालिक है लक्ष्मी, औरत और विद्या की मालिक है सरस्वती, वह भी औरत है। मगर औरत के लिये आपके मजहब में क्या लिखा है ?

ढोर, गंवार, शूद्र, पशु, नारी,
यह सब है ताड़न के अधिकारी।

अवगुण आठ सदा उर रहहीं

अर्थात् उनमें आठ अवगुण सदा ही होते है ।

श्री कल्प नाथ राय (उत्तर प्रदेश) : वे कौन से हैं ?

श्री शिव दयाल सिंह चौरसिया : यह तो आप तुलसी दास जी से पूछें । हम तो पढ़ नहीं पाए ।

(Interruption by Shri Kalp Nath Rai)

धन्यवाद । इतना मुझे याद नहीं है तो मैं अर्ज करता हूं कि इस देश में चूंकि स्त्रियों को आपने इतनी दुर्दशा में रखा है इसलिये यहां निर्धनता है । जिस स्त्री से हम पैदा होते हैं, जीवन मिलता है उसको हम पैर की जूती समझते हैं । यहां पुरुष कितना स्वार्थी रहा होगा कि यदि पुरुष मर जाए तो स्त्री अपनी जान देकर सती हो जाए । तो यह तो कानून बनाया गया यहां । इन सब बातों में यदि जाऊंगा तो बहुत बड़ी कथा कही जा सकती है । इसलिये मुझे तो यह कहना है कि अब जब तमाम वर्ल्ड की विमन का दिन भी मनाया और कानून भी बने, तो यह कानून जो शादी का है, यह इतना आदमी को बांध कर रखता है । इसमें कहा गया है कि जब तक सात फेरे नहीं लिये जायेंगे, शादी पूरी नहीं होगी । यह कस्टोमरी है ।

यह जरूरी नहीं है कि अब पंडित जी को बुलाये, रात को बारह बजे तक जागिये और तब कहीं फेरे होंगे । मैंने इसमें लिखा है कि कोई दो-चार आदमियों के सामने भी यदि लड़का-लड़की कह दें कि हम पति-पत्नी हैं, इट शुड सफाइस । यदि माला डाल कर के कोई अपनी असेंट देता है, वह भी ठीक है ।

एक माननीय सदस्य : कहीं अंगठी बदल कर भी होता है ।

श्रीमती सरोज खापर्डे (महाराष्ट्र) अगर गवाह नहीं हों, तो भी ठीक है ।

श्री शिव दयाल सिंह चौरसिया : गवाह तो बहुत से झूठे मिल जाते हैं। इस देश में गवाहों की कमी तो हो नहीं सकती। यह मेरा नया अमेंडमेंट नहीं है। यह अमेंडमेंट आलरेडी 1976 में मद्रास में हो चुका है।

गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री धनिक लाल मंडल) : भोजन देना होगा, उसके बाद गवाह मिलेगा। ऐसे ही नहीं मिलेगा।

श्री शिव दयाल सिंह चौरसिया : हमारे होम मिनिस्टर साहब कह रहे हैं कि भोजन पर भी गवाह मिल जाता है। पैसे देने पर भी मिल जाता है। शराब पिला दी जाए, तो भी मिल जाता है।

इसलिये मैं इसमें ज्यादा समय नहीं लूंगा। मैं समझता हूं कि इसमें किसी का विरोध भी नहीं होगा। इसलिये मैं यह बिल पेश करता हूं।

The question was proposed

श्री कल्प नाथ राय : उपसभाध्यक्ष महोदय, आदरणीय चौरसिया जी ने जो यह बिल पेश किया है मैं इसका स्वागत करता हूं और उन्होंने जो अपने बिल का उद्देश्य घोषित किया है उससे मैं सहमत हूं और साथ ही हिन्दू विवाह के सम्बन्ध में जो उन्होंने कहा है कि अगर कोई दो हिन्दू किसी कोर्ट में भी शादी करें तो भी वह लीगल माना जाना चाहिए और उस में कोई कस्टम्स या राइट्स का व्यवधान नहीं होना चाहिए। उपसभाध्यक्ष महोदय, अगर चौरसिया जी ने इस से बढ़ कर बिल पेश किया होता जो मुल्क में इक्वेलिटी बिफोर लॉ एण्ड इक्वल प्रोटेक्शन आफ लॉ पर आधारित है तो क्या कारण है एक संविधान के अनुसार हम काम करते हैं तो इस मुल्क में हिन्दू मैरिज का अलग एक सिस्टम होगा, मुसलिम मैरिज का अलग सिस्टम होगा, ईसाई मैरिज का अलग सिस्टम होगा। यह नहीं होना चाहिए बल्कि इस मुल्क में मैरिज के सम्बन्ध में एक सिविल कोड होना चाहिए और चाहे हिन्दू या मुसलमान हो, ईसाई हो या पारसी हो सब के लिए एक कानून होना चाहिए कि एक आदमी एक पत्नी से ही शादी कर सकता है।

SHRI HAREKRUSHNA MALLIC: (Orissa): One cannot marry some body else's wife. So, in the plac$_e$ c the word 'Patni', *i.e., 'vfa'* let hii say 'ourat' *i.e. 'rjxrft'* |

श्री कल्प नाथ राय : तो उपसभाध्यक्ष महोदय, जैसा कि मुस्लिम कानून में है कि एक व्यक्ति 4 बीवियां रख सकता है या 4 शादियां कर सकता है, यह बात नहीं होनी चाहिए और चौरसिया साहब को मैं बहुत धन्यवाद देता अगर इस तरह का कानून लाते कि इस मुल्क में एक ही सिविल कोड होगा और उस सिविल कोड के अंतर्गत जो मर्द या औरत शादी करना चाहे वह किसी भी कोर्ट आफ ला में जाकर अगर वह लड़का और लड़की दोनों मेजर हैं—किसी मजिस्ट्रेट के सामने कहे कि हम शादी करना चाहते हैं अपनी कंसेन्ट से इस तरह की शादी को मान्यता मिलनी चाहिए और पूरे मुल्क में एक सिविल कोड होना चाहिए। हिन्दू शादी के संबंध में यह संशोधन कि वहां कस्टम न हो, राइट न हो, यह तो व्यवस्था लाए में उनकी भावना से सहमत हूं। उन्हों हिन्दू मैरिज एक्ट के संबंध में जो विचा

[श्री कला नाथ राय]

रखा है मैं उससे सहमत हूं। लेकिन जब हमने सारे हिन्दुस्तान के लिए एक संविधान, एक आईन स्वीकार किया है और ईक्वलिटी बिफोर ला एण्ड ईक्वल प्रोटेक्शन आफ लां को माना है और सारे हिन्दुस्तान के लोगों को एक अधिकार है, तो क्या कारण है मुस्लिम के लिए एक अलग कानून हो। एक मुस्लिम 4 शादियां करें, इस तरह की बात इस मुल्क में बिलकुल खत्म की जानी चाहिए। एक सिविल कोड मैरिज का बनाना चाहिए जिस के अंतर्गत हिन्दुस्तान के सभी नागरिकों को ईक्वलिटी बिफोर ला और ईक्वल प्रोटक्शन आफ ला के आधार पर मैरिज कोर्ट के माध्यम से कराया जाए। मैं चौरसिया जी के इन प्रगतिशील विचारों से सहमत हूं कि इसमें कर्मकांड जैसी चीजें नहीं होनी चाहिएं। हिन्दुस्तान की धरती के ऊपर बार-बार जो विदेशी हमले हुए हैं उसका मूल कारण हमारे यहां जो सामाजिक उत्पीड़न रहा है, आर्थिक शोषण रहा है वह है। इन दो बीमारियों से मुक्त करने के लिये इस मुल्क में समता वाले समाज की स्थापना की जानी चाहिए और दुनिया के बहुत बड़े विद्वान गुनार यारिग ने लिखा है कि :

"There are countries in the world which are either horizontally divided or vertically divided, and India is the only country which is horizontally divided as well as vertically divided."

(दुनिया में एक मुल्क है जहां आर्थिक प्रश्न है, जहां सामाजिक प्रश्न है लेकिन हिन्दुस्तान ही एक ऐसा मुल्क है जो आर्थिक उत्पीड़न और सामाजिक उत्पीड़न के दोनों रोगों से ग्रसित है।) ऐसी स्थिति में इस मुल्क में समस्याओं का हल ढूंढने के लिए नया चिंतन करने के आधार पर ही हो सकता है। आदरणीय चौरसिया एक प्रगतिशील विचारक हैं, उन्होंने अपनी सारी जिंदगी शोषित और पीड़ित जनता की सेवा में बिताई है; मैं उनको व्यक्तिगत रूप से जानता हूं। उन्होंने सामाजिक उत्पीड़न को समाप्त करने के लिए आर्थिक शोषण को समाप्त करने के लिए अपनी सारी जिंदगी की कुर्बानी दी है। और यह जो प्रगतिशील विधेयक लाए हैं तो मैं उन से यह भी निवेदन करूंगा कि इस से भी ज्यादा प्रगतिशील विधेयक जिसमें एक सिविल कोड मैरिज का बनेगा, जिसमें हिन्दुस्तान के सभी नागरिकों को समान रूप से ईक्वलिटी बिफोर ला एण्ड ईक्वलिटी आफ ला होगा, वह लाए। क्योंकि जब हमने संविधान को स्वीकार किया है तो चाहे हिन्दू हो, ईसाई हो, मुस्लिम हो, सिख हो, पारसी हो सारे हिन्दुस्तान के लोगों के वास्ते एक मैरिज ऐक्ट होगा तो हम समता पर आधारित समाज की रचना करेंगे और आप की भावना के अनुकूल नए भारत का निर्माण कर सकेंगे। इन शब्दों के साथ मैं इस विधेयक का स्वागत करता हूं।

SHRI K. K. MADHAVAN (Kerala): Sir, I think the mover of the Bill himself has been confused. It is a product of confusion, of confused thinking.

SHRI YOGENDRA SHARMA (Bihar): Marriage is also a product of confusion.

SHRI K. K. MADHAVAN: Fusion not confusiota. There is a lot of difference between fusion and confusioto.

Sir, I want to be as brief as possible So that we can cover the entire subject within the limited time. I have given notice of an amendment.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SHYAM LAL YADAV): You speak On the amendment also.

SHRI K. K. MADHAVAN: No, on the amendment, I can finish the whole thing in One minute. Now, the Statement of Objects and Reasons says:

"The Hindu Marriage Act 1955, declared a Hindu marriage not only dissoluble, but also enabled the

Hindu to marry each other irrespective of their *varma, caste* or gotra. A Hindu marriage was a sacrament according to *shastras* because its purpose was to enable a Hindu male to have offspring so that he could get *mukti* after his death. The Hindu Marriage Act by making bigamy unlawful and by not allowing divorce on the ground of inability of either spouse to procreate, weaned away from the Hindu marriage its sacramental nature."

This is very important.

"Yet the wording of section 7 of the Hindu Marriage Act according to which a Hindu marriage can be solemnized only if the ceremonies performed are according to customs of either party, makes it appear that the Parliament had intended a Hindu marriage to remain a sacrament.

-

This provision has led the courts to believe that a Hindu marriage remains a sacrament and a whole lot of decisions have been given wherein Hi'ndu marriages not performed in accordance with the customary rites and ceremonies of the parties concerned were declared invalid. Many marriages which were solemnized in a simple manner which did not involve the presence of priests, chanting of *mantras* in front of the sacred fire, and many other outdated; ceremonies were declared invalid by the then Madras High Court.

Because of these decisions, the Madras Legislature (as it was then called) passed a law amending section 7 of the Hindu Marriage Act providing that a marriage can be performed without performing the traditional ceremonies."

That is all right.

"This Bill also aims to make a similar provision whereby the obligation to perform traditional ceremonies for a Hindu marriage can be dispensed with. Such a measure, it is felt, will help to give a feeling of strength and self-dependence. .."

I emphasise the word "self-dependence".

"... to the parties to a marriage and will also go a long way in curbing avoidable expenditure on Hindu marriages."

A part of tfcis I welcome. The latter part of the Statement of Objects and Reasons, I welcome to an extent. But "thus far and no farther" cannot be the principle. The principle that inspires the mover of the Bill is "thus far and no farther". I want to 8° farther. That is my purpose. That is why I have given notice of an amendment. I will speak on it at the appropriate time. My point of views is this. Sir, I got married in 1953 without the presence of a *purohit,* without the chanting of *mantras,* without even tying the *thali* or *mangal-sutra.* My bride's people felt a little surprised at it. I said, "Why should there be a wedding band around the neck of the woman only? I am prepared to tie the wedding band around the neck of the bride if the bride will also tie a similar band around my neck, because equality between man and woman is the order of the day." It was in 1953—the post-independence days. Now, a quarter of a century is over. Sir, my point is this. Why should there be this much of limitation? If you welcome the idea of liberalisation of the ceremonies or avoidance of ceremonies and all the paraphernalia of the customary type of marriages, why should you stop at this? Why cannot two major parties, man and woman, of any caste, any religion—of course, that is provided by the Civil Marriages Act; I do not go into it; I am not forgetful of it; it is there—enter into a contract of their own, *on* their

[Shri K. K. Madhavan]

own, without these rituals? of course, that Civil Marriages Act is there. This is a matter of Hindu marriage. These customary rituals should go, because they are outmoded. I do not consider marriage as a sacrament. I consider marriage as a life-long contract between two contractable parties, dontractable according to law, and a marriage contracted by the will and consent of the contracting parties, man and woman, must stand. That is my point. I have elaborated my objective in the amendment. I will speak about that also. Therefore, my point is marriage is not a sac-Tament, according to me. Marriage is between two equal partners, man and woman having equal status both in law and in practice, in the society and. in all respects. Thank you.

SHRI HAREKRUSHNA MALLICK: sir, while I rise to support this Bill moved by the honourable and learned friend, I wish to bring a little light from the scientific point of view on this. A political philosopher while describing the different types of Government, said: "Oh!. Ttemocracy, with all thy defect, I love thee." In the same tone, as with democracy, I would like to commend marriage as the best form of union between an eligible man and an eligible woman anywhere in the world, what to speak of within this country or within the Hindu Society alone. To commend marriage as a form of union, let me say, "O, mar-Tiage, with all thy defects, I commend thee'.

Now, for reasons biological, •social and also temporal—that is, in Tespect of time,—it is acceptable and necessary that the age group should be matching. Of course, •there are so many variations." Men after the age of 70 or 80 are marrying girls of 16 and the reverse is also happening, as has happened recently in some instances. But that is entirely different—that is an exception.

But for a wholesome, normal society the age-old practice has been appropriate and age group should be matching. So far, everywhere this human society has been practically vivisected on many grounds— mostly based on selfish motives; caste, colour, creed, region, language rich, poor, educated, uneducated, urban, rural and so o'n and so forth. Across these barriers which are only in-human and artificial, though made, of course, by man himself, are untenable. The man and the woman who often jump across these inhuman barriers and have the union. For this union if we go to mythology, when Lord Krishna wanted to have union with Radha, well, nothing could prevent them. Similarly, one of the ardent lovers who happened to be wearing the crown of an empire, had to abdicate himself to" meet the woman of his choice, He was Edward VIII. For this type of protection or possession of a partner so many mythological and historical wars took place. The great Ramayana and Mahabharat centre round protecting one woman or the other. And that is why I say this union by marriage has been considered so sacred, scientific and cordial, that one partner dies for the other or lives for the other.

So, in view of this, when our hon. friend has brought forward a proposal to simplify marriages enabling the intending souls to unite, certainly we should give very attentive thought to it. Sir, this House is called the House of Elders and the opinion of this esteemed House should prevail upon the nation as the opinion of elders prevails on a society Even if the advice of this esteemed House is accepted only by a cross-section of the society, if not by the whole society, it will do immense good not only to unite the souls, but possibly to unite the whole nation. So, with that perspective, I rise enthusiastically to applaud and support this move. Ours is an esteemed House and whatever is debated, discussed or decided here catches the

attention of the press and mass me- dia and naturally it will get into the minds of those who "are otherwise busy and it will percolate to many of the platforms and unio$_n$ of the intending souls will become easier. With this objective, when we are going to simplify marriages between intending partners, we should take a positive view. Today m$_y$ friend has brought thi$_s$ measure to simplify marriages among Hindus.' On another day somebody will bring a measure to simplify Muslim mar. riages. Then als$_0$ I will support it with the same enthusiasm. I would also like to place on record that I will support any measure brought forward to facilitate marriages irrespective of caste, colour or religion. Even I will support measure$_s$ in favour of international marriages where I think all barriers should be removed. Anywhere, any marriage between two eligible person$_s$ should be encouraged and also protected by societies, by the surroundings and environments, if possible with the help of Governmental agencies. For instance, if in a college a lady student and a boy student fall in love and decide to marry $_3$ they should be encouraged even though their parents may not agree to the union, though other$_s$ may try to prevent or some villains may intervene to obstruct the marriage. Natural justice demands that the moment th$_e$ intending soul$_s$ report their intention to the head of the institution, it should be the mandatory duty of the head of the institution to go to their rescue. For instance, in a court of law, whenever there i$_s$ a dispute between two men regarding a woman, the court asks he$_r$ as to who is her choice. The moment she says that she wants to go and live with such and such person, the court accepts that. The law protects her. Nobody o$_n$ earth ca$_n$ prevent her union with the person of her choice. This is nothing but natural justice.

Another point I will say. How did Balmiki acquire his poetic skill? He saw a pair of heron$_s$ in union or duet. Whe$_n$ one $_0$f them wa$_s$ shot dead, the living partner became agonised. Balmiki happened to see this and that inspired him to compose the first poem and then the famous epic, the Ramayana. The same applies t° a pair of animals. If one is shot, the other feels its loss. So also with man and woman. This is the very fundamental law of nature. And that fundamental law is to recreate and procreate. It i$_s$ healthy for the progress of the nation. Irr science it is called Eugenics.

Now, it has been experimented ire the animal kingdom and it has also been proved that cross-breeding is. the best form of breeding. And, in the case of human beings also, any breeding should be a cross-breeding. So, for this sort of cross-breeding this sort of union should be allowed so that nature functions freely. And in this way, the best type of individuals will be born in any society or in any country. So, Sir, while supporting this Bill, I want to give a few suggestions.

Firstly, whenever two intending marriageable adults propose to marry, | whether they are working in any place or whether they are studying in any institution, the heads of these institutions should come to their help and assistance. Whenever these things are taken to any court of law, these marriages should be free of charge. So also, if they decide, on any ground, to marry in their own j homes, court fee should not be there : or only a minimum charge should be ; demanded from them, because it is j the duty of the State also to see that the two individuals do live happily so that they can contribute in their own way to the society or the nation. Another purpose that will be served by simplifying this marriage is that this will work against many frauds committed by certain individuals. Nowadays, we see, some affluent men or some persons not

[Shri Harekrushna Mallick]

with a good character just try to bait saying, "I will marry this girl" and, immediately, the innocent girl or the lady concerned is enticed. But, later on, the boy or the man may abandon her. In that case, this process of simplifying the methods will protect the helpless partner, *i.e.* the lady. Therefore, Sir, I support this and I would like to say that in all matters, this should be simplified and this should be allowed to be discussed on all platforms. This will promote inter-caste marriages also which have been experimented in Tamil Nadu and, in the greater interest of the nation, this should be allowed at the national level. This will definitely benefit the society as a whole.

With these words, Sir, I support this Bill.

شری پیارے لال کریل عرف طالب (اتر پردیش) : مہودے — میں صرف چلد ملٹ لوں گا -

उपसभाध्यक्ष (श्री श्यामलाल यादव): समय बहुत कम है।

شری پیارے لال کریل عرف طالب: میں صرف یہ بتانا چاہتا ہوں کہ شادی کی شروعات کیسے ہوئی اس کا کیا اتہاس ہے — یہ اتہاس شروع ہوتا ہے پرمیٹیو ایج سے — مرد ہوتے تھے عورتیں ہوتی تھیں اور اس وقت کا سب سے بڑا اصول یہ تھا کہ جس کی لاٹھی اس کی بھینس - جو طاقت ور ہوتا تھا یا طاقت ور آدمی ہوتا تھا وہ پچاس پچاس بیویاں رکھ لیتا تھا - عورتیں اس وقت پراپرٹی سمجھی جاتی تھیں- جائیداد سمجھی جاتی تھیں جیسے ہم جانوروں کو سمجھتے ہیں — اسی طرح عورتوں کو سمجھا جاتا تھا- جو طاقتور آدمی ہوتا تھا پچاس پچاس عورتیں گھر میں رکھ لیتا تھا اور جو کمزور آدمی ہوتا تھا اس کو ایک بھی بیوی نصیب نہیں ہوتی تھی - اس طرح ٹرائبل جھگڑے ہوتے تھے آپس میں جھگڑے ہوتے تھے کچھ مدت کے بعد اس حادثہ کے بعد لوگوں نے سمجھا کہ اس طرح جھگڑے ہوتے ہیں - خون خرابہ ہوتا ہے اس لئے ہمیں کچھ نیم بنانے چاہئیں - جس کی وجہ سے ہم یہ سمجھ سکیں کہ یہ دوسرے کی بیوی ہے - طاقت ور آدمی دوسرے کی بیوی کو بھگا کر لے جاتا تھا یہ سمجھ کر کہ یہ پراپرٹی کی چیز ہے - جیسے کہ آج کل ہم چیزیں اور جانور چرا لے جاتے ہیں ایک جگہ سے دوسری جگہ پر یہ صحیح نہیں ہے - جھگڑے ہوتے ہیں خون خرابہ ہوتا ہے - اس لئے ایک عورت اگر کسی کی ہو گئی ہے تو اس کو اس کی رہنے دینا چاہئے تاکہ جھگڑے نہ ہوں اور کوئی دوسرا اس پر قبضہ نہ کر سکے - چلد لوگوں نے یہ سوچا کہ اگر کوئی عورت کسی کی بن چکی ہے تو ایک نہست ہو جانی چاہئے تاکہ سب کو معلوم ہو جائے — تو انہوں نے

یہ رسم نکالی اور وہ فہرست دیتے تھے سب کے سامنے اور یہ طے ہو جاتا تھا کہ یہ مرد اور عورت ایک دوسرے کے ہو گئے اور ان پر کسی دوسرے کا ادھیکار نہیں ہے نہ مرد پر نہ عورت پر— ایک قسم سے یہ مان لیا جاتا تھا کہ یہ وائف اور ہسبینڈ ہیں— پھر اس کے بعد انہوں نے یہ رسم بنائی کہ مانگ میں سیندور ڈالا جائے کیوں کہ شادی کے بعد بھی جھگڑا ہونے لگا تھا — پتہ نہیں لگتا تھا کہ یہ کس کی بیوی ہے تو مانگ میں سیندور ڈالنے سے معلوم ہو جاتا تھا کہ یہ کسی کی بیوی ہے اور کسی اور کا اس پر ادھیکار نہیں ہو سکتا— یہ جو رسمیں تھیں وہ آپس میں بیٹھکر طے ہو جاتی تھیں اور اس کے بعد سے جب براہمن کا مہتو سماج میں قائم ہوا— آج بھی جب بچہ ہوتا ہے تو براہمن کی ضرورت پڑتی ہے نام کرن جب ہوتا ہے تو براہمن کی ضرورت پڑتی ہے - جب ویوپار شروع کرتے ہیں تو براہمن کی ضرورت پڑتی ہے اور جب شادی ہوتی ہے تب بھی براہمن کی ضرورت پڑتی ہے آخر کار جب آدمی مر جاتا ہے تو بھی وہ اپنا ٹیکس وصول کرنے کے لئے لاش کے ساتھ ساتھ جاتا ہے -

اور یہیں پر ہی نہیں مر جانے کے بعد وہ پشت در پشت ٹیکس وصول کرتا ہے - ایک آدمی جو آج سے پچاس سال پہلے مر گیا تب بھی وہ براہمن کو ٹیکس دیتا ہے - انہوں نے اپنے سوارتھ کے لئے اپنے پریولیج کو قائم رکھنے کے لئے اور بغیر کام کئے ہوئے پیٹ بھرنے کے لئے یہ سب اصول بنائے تاکہ بغیر براہمنوں کے سماج میں کوئی کام نہ ہونے پائے— اب زمانہ بدل رہا ہے ہم لوگ آگے جا رہے ہیں - ساری دنیا آگے جا رہی ہے اور دنیا کے اندر ایک مانو دھرم پیدا ہو رہا ہے - میں خود مانو دھرم کو ماننے والا ہوں - میرے گھر میں جتنے بھی مذہبی رہنما ہوئے ہیں سب کی تصویر آپ پائیں گے - اللہ کے نام کی تصویر بھی پائیں گے - مگر میں مانو دھرم کو مانتا ہوں - میں ان سب کو ایک مہان آدمی کے طور پر مانتا ہوں جو یہاں پر آئے اور جنہوں نے سماج کا سدھار کیا اور سب کو برادر ہوڈ بھائی بندی کی تعلیم دی - مگر ہم لوگ جو ان کے چیلے ہوئے جو فالوور ہوئے ہم نے مذہب کی چہار دیواری میں اس کو بند کر دیا اور یہ کہا کہ جو ہمارے مذہب میں وشواس رکھتا ہے وہی انسان ہے دوسرا انسان نہیں ہے یہ سب سے بڑی غلطی ہم نے کی - آج ہم مانو دھرم کو مانتے ہیں، مذہب انسانیت کو مانتے ہیں ساری دنیا کا ایک مذہب ہونا چاہئے اور کسی قسم کی

[شری پھارے لال کریل عرف طالب]

ذات اور مذہب کوئی چیز نہیں ہے - یہ سب انسان کے بنائے ہوئے جھگڑے ہیں - چورسیا صاحب نے جو موشن آج موو کیا ہے میں اس کی پر زور تائید کرتا ہوں - جب دو آدمی شادی کے لئے تیار ہو جاتے ہیں - چار چھہ آدمیوں کو بلا لیا جائے اور ان کی شادی کر دی جائے - چار چھہ آدمیوں کو بلانا اس لئے ضروری ہے کہ وہ گواہی کے طور پر کہہ سکیں کہ سچ مچ ان کی شادی ہوئی ہے بعد میں اگر کوئی جھگڑا کھڑا ہو جائے تو ان کی موجودگی یہ طے کر دیگی کہ وہ مرد اور عورت ہیں یا نہیں ہیں۔ اب اتنا خرچ ہوتا ہے آپ اندازہ لگائیے - ابھی کل ہی میں نے ایک شادی اٹینڈ کی ہے صرف کھانے پر پچیس یا تیس ہزار روپئے خرچ ہوئے ہیں - حیدرآباد سے برات آئی - میں آپ کو صحیح بتاتا ہوں کہ صرف کھانے پر تیس ہزار سے کم خرچ نہیں ہوا ہوگا - وہاں جس قسم کا کھانا پینا ہم نے دیکھا کہ اس کا آپ اندازہ نہیں لگا سکتے - آج ہم شادی کے موقعہ پر دہیز بھی مانگتے ہیں - ہمیں چاہئے کہ سماج کے اندر نئے نئے وچار ہم لائیں - مردوں کے اندر اور عورتوں کے اندر نئے نئے وچار لائیں - عورتوں پر کتنے ظلم ہوتے ہیں - اس کا بھی

آپ اندازہ نہیں لگا سکتے- میں آپ کو ایک تجربہ کی بات بتاتا ہوں - یہاں کئی ورکنگ وومن ہیں جو کام کرتی ہیں تو صرف دہیز کو جمع کرنے کے لئے - یہاں تک کہ اپنے جسم کو بیچنے کے لئے بھی تیار ہیں تاکہ کچھ جہیز جمع ہو جائے اور شادی ہو سکے - اُن کی شادی کا معاملہ بھی ذات کی وجہ سے محدود ہے کیونکہ وہ کہتے ہیں کہ اپنی ذات میں شادی کرے تو اپنی ذات کے اندر ہی تمام سیڑھیاں ہیں - جیسے براہمن، براہمنوں کے اندر ہیں - راجپوتوں کے اندر ہیں، ویشیو کے اندر ہیں - شیڈولڈ کاسٹ اور شودروں کے اندر ہیں - یہاں تک کہ شیڈولڈ کاسٹ بھی کسی دوسرے شیڈولڈ کاسٹ سے شادی نہیں کر سکتا - جین لوگ ہیں دوسرے لوگ ہیں ان کا دائرہ اتنا تنگ ہے اور اتنا پیسہ خرچ کرنا پڑتا ہے - ایک سی - آئی - ڈی کے ڈی - ایس - پی ہیں ان کی لڑکی کی شادی ہونی تھی - انہوں نے مجھے کہا کہ آپ آ جائیے کیونکہ جہیز کا معاملہ بھی اٹھے گا - لڑکے نے لڑکی دیکھ لی اور لڑکی کو پسند کر لیا اور لڑکی والوں نے پندرہ سو روپئے بھی لڑکے والوں کے دے دیئے ہیں اور مٹھائی بھی بانٹ دی - ایک مہینے کے بعد ان حضرت نے شادی سے انکار کر دیا کیونکہ ان کو ایک دوسری

کوئی پابندی نہ رہے - حالانکہ اسپیشل میرج ایکٹ پاس ہے سب کچھ ہے - اس پر بھی بہت سی ایسی باتیں ہیں جن کو سدھارنے کی ضرورت ہے -

اب میں نہایت ہی پرزور الفاظ میں اس موشن کی تائید کرتا ہوں اور چودھری صاحب کو داد دیتا ہوں کہ انہوں نے جو ہمت کی ہے کہ اس بل کو یہاں لائے ہیں - میں ان کی پوری سپورٹ کے ساتھ اپنی بات اب ختم کرتا ہوں -

†[श्री प्यारे लाल कुरील उर्फ तालिब (उत्तर प्रदेश) : महोदय, मैं सिर्फ चन्द मिनट लूगा ।]

श्री उपसभाध्यक्ष (श्री श्याम लाल यादव) : समय बहुत कम है ।

†[**श्री प्यारे लाल कुरील उर्फ तालिब** : मैं सिर्फ यह बताना चाहता हू कि शादी की शुरुआत कैसे हुई, इसका क्या इतिहास है। यह इतिहास शुरू होता है प्रिमिटिव ऐज से--मर्द होते थे, औरतें होती थी और उस वक्त का सबसे बड़ा उसूल यह था कि जिसकी लाठी उसकी भैंस, जो ताकतवर कबीला होता था या ताकतवर आदमी होता था, वह 50-50 बीवियां रख लेता था । औरतें उस वक्त प्रापर्टी समझी जाती थी जायदाद समझी जाती थी । जैसे हम जानवरों को समझते हैं उसी तरह औरतों को समझा जाता था । जो ताकतवर आदमी होता था 50 औरतें घर में रख लेता था और जो कमजोर आदमी होता था उसको एक भी बीवी नसीब नहीं होती थी । इस तरह ट्राइबल झगड़े होते थे, आपस में झगड़े होते थे । कुछ मुद्दत के

Devanagri Transliteration.

جگہ سے دو لاکھ روپیئے مل رہے تھے اور اس قی - ایس - پی نے کہا کہ ہم ایک لاکھ دینے کو تیار ہو گئے تھے - میں نے کہا کہ آپ ایک لاکھ کیوں دینے کو تیار ہو گئے تھے - اگر آپ چاہیں تو میں ان کو پکڑوا دوں - میں نے کہا کسی طرح سے گرفتار کرا دوں گا - اب قی - ایس - پی ہوکر ایک لاکھ روپیہ دینے کو وہ تیار ہیں - پھر بھی اس کے بعد بے چارے کو انکار کر دیا اور لڑکے نے دوسری جگہ شادی کر لی - یہ چیز سماج کے اندر بہت بری ہے اور ہم کو سمجھنے کی ضرورت ہے - اب مائر دھرم کو لے کر چلیں - دو عورت مرد جب تیار ہو جائیں، دو چار آدمیوں کو بلا کر ان کی شادی ہو جائے - اس سے خرچ میں بھی کمی ہو جائیگی - لڑکی اور لڑکوں کے سمبندھ میں جو دقتیں ہیں وہ ختم ہونی چاہئیں - ڈائیورس کے بارے میں یہ ہے کہ یہ اتنا کمپلیکیٹیڈ ہے کہ میرے پاس بہت سے لوگ آئے ہیں جو کئی سالوں سے عدالتوں میں لڑ رہے ہیں ان کی جوانی گذری جا رہی ہے بوڑھے ہو رہے ہیں - اگے بچے پیدا کرنے کے قابل نہیں رہینگے، آنسو بہاتے ہیں روتے پیٹتے ہیں - آج کتنے لاکھ کیسیز عدالتوں میں پڑے ہوئے ہیں لیکن ڈائیورس نہیں ہوتا ہے اس کو سمپلیفائی کرنے کے لئے سیول کورٹ بنانے کی ضرورت ہے - کوئی ذات پات نہ رہے مذہب کی

[श्री प्यारे लाल कुरील उर्फ तालिबा]

बाद इस हादसे के बाद लोगों ने समझा कि इस तरह झगड़े होते हैं खूनखराबा होता है, इसलिए हमें कुछ नियम बनाने चाहिए जिसकी वजह से हम यह समझ सकें कि यह दूसरे को बीवी है ताकतवर आदमी दूसरे की बीवी भगा कर ले जाता था। यह समझ कर कि यह प्रापर्टी की चीज है जैसे कि हम आजकल चीजें और जानवर चुरा ले जाते हैं एक जगह से दूसरी जगह पर यह सही नहीं है। झगड़े होते हैं, खूनखराबा होता है इसलिए एक औरत अगर किसी की हो गई तो उसको उसकी रहने देना चाहिए ताकि झगड़े न हों और कोई दूसरा इस पर कब्जा न कर सके।

चन्द लोगों ने यह सोचा कि अगर कोई औरत किसी की बन चुकी है तो एक फीस्ट हो जानी चाहिए ताकि सबको मालूम हो जाये तो उन्होंने यह रस्म निकाली और वह फीस्ट देते थे सबके सामने और यह तय हो जाता था कि यह मर्द और औरत एक दूसरे के हो गये और इन पर किसी दूसरे का अधिकार नहीं है—न मर्द पर न औरत पर। एक किस्म से यह मान लिया जाता था कि यह वाइफ और हसबेंड हैं और फिर इसके बाद उन्होंने यह रस्म बनाई कि मांग में सिंदूर डाला जाय क्योंकि शादी के बाद भी झगड़े होने लगे थे। पता नहीं लगता था कि यह किसी की बीवी है तो मांग में सिंदूर डालने से यह मालूम हो जाता था कि यह किसी की बीवी है और किसी और का उस पर अधिकार नहीं हो सकता। जो रस्में थीं वह आपस में बैठ कर तय हो जाती थीं और इसके बाद तो जब ब्राह्मण का महत्व समाज में कायम हुआ। आज भी जब बच्चा होता है तो ब्राह्मण की जरूरत पड़ती है, नामकरण होता है तो ब्राह्मण की जरूरत पड़ती है। जब व्यापार शुरू करते हैं तो ब्राह्मण की जरूरत पड़ती है और जब शादी होती है तब भी ब्राह्मण की जरूरत पड़ती है आखिरकार जब आदमी मर जाता है तो भी वह अपना टैक्स वसूल करने के लिए लाश के साथ साथ जाता है। और यहीं पर ही नहीं मर जाने के बाद पुश्त-दर-पुश्त टैक्स वसूल करता है। एक आदमी जो आज से 50 साल पहले मर गया तब भी वह ब्राह्मण को टैक्स देता है। उन्होंने अपने स्वार्थ के लिए अपने प्रिविलिज को कायम रखने के लिए और बगैर काम किए हुए पेट भरने के लिए यह सब उसूल बनायें ताकि बगैर ब्राह्मणों के समाज में कोई काम न होने पाये। अब जमाना बदल रहा है हम लोग आगे जा रहे हैं, सारी दुनिया आगे जा रही है और दुनिया के अन्दर एक मानव धर्म पैदा हो रहा है। मैं खुद मानव धर्म को मानने वाला हूं। मेरे घर में जितने भी मजहबी रहनुमा हुए हैं सब की तस्वीर आप पायेंगे। अल्लाह के नाम की तस्वीर भी पायेंगे मगर मैं मानव धर्म को मानता हूं। मैं उन सब को एक महान आदमी के तौर पर मानता हूं जो यहां पर आये और जिन्होंने समाज का सुधार किया और सब को ब्रदरहुड भाईबन्दी की तालीम दी। मगर हम लोग तो उनके चेले हुए हमने मजहबी की चाहरदीवारी में इसको बन्द कर दिया और यह कहा कि जो हमारे मजहब में विश्वास रखता है, वही इन्सान है। दूसरा इन्सान नहीं है यह सबसे बड़ी गल्ती हमने की है आज हम मानव धर्म को मानते हैं, मजहबी इन्सानियत को मानते हैं, सारी दुनिया का एक मजहब होना चाहिए और किसी किस्म की जात और मजहब कोई चीज नहीं है। ये सब इन्सान के बनाये हुए झगड़े हैं। चौरसिया साहब ने जो मोशन आज मूव किया है मैं उसकी पुरजोर ताईद करता हूं जब दो आदमी शादी के लिए तैयार हो जाते हैं—चार छः आदमियों को बुला लिया जाये और उनकी शादी कर दी जाये। चार छः आदमियों को बुलाना इसलिए जरूरी है कि वे गवाही के तौर पर कह सकें कि सचमुच इनकी शादी हुई है।